

स्वर्णारि वि. (तत्.) 1. स्वर्ण का शत्रु पुं. 1. गंधक
2. सीसा नामक धातु।

स्वर्णालंकार पुं. (तत्.) स्वर्ण के आभूषण, सोने के
गहने, जेवर।

स्वर्णालंकृत वि. (तत्.) 1. सोने से अलंकृत,
सुशोभित 2. जो सोने के आभूषणों से सुसज्जित
हो।

स्वर्णिम वि. (तत्.) 1. स्वर्णयुक्त, सोने का,
सुनहला 2. लाक्ष. भव्य, आभामय।

स्वर्णुली स्त्री. (तत्.) एक प्रकार का क्षुप, सोनुली,
हेमपुष्पी।

स्वर्णोपधातु पुं. (तत्.) सोनामक्खी नामक उपधातु।

स्वर्दति पुं. (तत्.) स्वर्ण का हाथी, ऐरावत।

स्वर्धनी स्त्री. (तत्.) गंगा, मंदाकिनी।

स्वर्नगरी स्त्री. (तत्.) स्वर्ण की पुरी के रूप में
प्रसिद्ध अमरावती।

स्वर्नदी स्त्री. (तत्.) आकाश-गंगा।

स्वर्भानु पुं. (तत्.) 1. श्रीकृष्ण का एक पुत्र जो
सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था 2. राहु
ग्रह।

स्वर्भू पुं. (तत्.) स्वर्ण।

स्वर्लोक पुं. (तत्.) स्वर्ग।

स्वर्वधू स्त्री. (तत्.) अप्सरा।

स्वर्वापी स्त्री. (तत्.) गंगा।

स्वर्वेश्या स्त्री. (तत्.) अप्सरा।

स्वर्वैद्य पुं. (तत्.) स्वर्ण का वैद्य, चिकित्सक,
अश्विनी कुमार।

स्वल्प वि. (तत्.) मात्रा या गुणवत्ता की दृष्टि से,
अत्यंत कम, बहुत थोड़ा।

स्वल्पक वि. (तत्.) जो स्वल्प हो, बहुत अल्प
(मात्रा/वस्तु) वाला, बहुत कम।

स्वल्प विराम ज्वर पुं. (तत्.) थोड़ी देर के लिए
उतरकर फिर चढ़ जाने वाला ज्वर।

स्वल्पव्यक्ति तंत्र पुं. (तत्.) चंद लोगों द्वारा
किया जाने वाला शासन। oligarchy

स्वल्प शरीर वि. (तत्.) बहुत छोटे कद का,
ठिंगना।

स्वल्प-स्मृति वि. (तत्.) जिसे बहुत कम याद रहे,
मंद-स्मृति वाला, जिसकी स्मरण-शक्ति बहुत
मंद हो।

स्वल्पायु वि. (तत्.) बहुत कम आयु वाला,
अल्पजीवी।

स्वल्पाहार पुं. (तत्.) बहुत थोड़ा भोजन, बहुत
कम भोजन करना।

स्वल्पाहारी वि. (तत्.) बहुत थोड़ा भोजन करने
वाला।

स्वल्पिष्ठ वि. (तत्.) बहुत ही कम, बहुत ही छोटा।

स्ववरण पुं. (तत्.) सुवर्ण, सोना।

स्ववर्णी रेखा स्त्री. (तत्.) सुवर्णरेखा (नदी)।

स्ववश वि. (तत्.) 1. जो अपने वश में हो 2. जो
अपनी सामर्थ्य के अनुसार व्यवहार करता हो 3.
स्वतंत्र 4. आत्मसंयमित, जितेंद्रिय विलो. परवश।

स्ववशता स्त्री. (तत्.) 1. स्ववशमें होने का भाव या
गुण, स्वाधीनता 2. आत्मसंयमितता, जितेन्द्रियता।

स्ववश्य वि. (तत्.) 1. जो अपने ही वश में करने
के योग्य हो 2. जो अपने आप पर नियंत्रण
रखने में समर्थ हो।

स्ववासिनी स्त्री. (तत्.) 1. वह जो अपने घर में
रहती हो 2. वह कुँआरी या विवाहित कन्या जो
वयस्क हो जाने पर भी अपने पिता के घर रहती
हो।

स्वविग्रह पुं. (तत्.) अपना शरीर, निजकाया।

स्ववित्त पुं. (तत्.) अपना धन, अपनी सभी प्रकार
की संपत्ति।

स्वविनाश पुं. (तत्.) 1. अपना विनाश 2. अपने
जीवन की बरबादी, आत्मीय पतन 3. आत्महत्या।